वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

वीरांगना महारानी दुर्गावती : एक ऐतिहासिक अध्ययन

[1]आलोक कुमार पांडेय
[2]शिव विजय त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

रानी दुर्गावती ने युद्ध क्षेत्र में जो वीरता और रण कौशल दिखाया वह अद्‌वितीय है। हमको भारत तथा संसार की अन्य वीरांगनाओं का इतिहास भी ज्ञात है पर बहुत कुछ खोज करने पर भी ऐसी दूसरी नारी दिखाई नहीं पड़ती जिसने दुर्गावती के सामान वर्षों तक सुशासन करके सेना को इतना सुदृढ़ बनाया हो कि वह अकबर जैसे प्रसिद्ध सम्राट की शक्तिशाली सेना को दो बार पराजित कर सके। साथ ही अन्य किसी स्त्री ने युद्ध के रणक्षेत्र में दुर्गावती के सामान अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करके प्रसिद्ध वीरों के छक्के छुड़ा देने का कठिन कार्य भी करके नहीं दिखाया। इतिहास में दो चार क्षत्राणियों के नाम ही पढ़ने में आते हैं जिन्होंने कोई आकस्मिक अवसर उपस्थित हो जाने पर युद्ध क्षेत्र में प्रत्यक्ष युद्ध करके शत्रु पर विजय प्राप्त की हो। पर उनके संबंध में इतनी कम बातें ज्ञात होती हैं कि उनके आधार पर उनका विशेष वर्णन नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी शासन के समय एकमात्र झांसी वाली रानी लक्ष्मीबाई ही गत सैकड़ो वर्षों के भीतर ऐसी वीरांगना है जिसने स्त्रियों के अबला कहे जाने वाले कलंक को मिटाने के लिए एक प्रशंसा के योग्य उदाहरण सामने रखा है। देश के स्वाधीनता संग्राम में एक महत्वपूर्ण फर्ज अदा करके अपन प्राणों की आहुति देने की दृष्टि से इन दुर्गा और लक्ष्मी में कोई अंतर नहीं पर शस्त्र संचालन में दुर्गावती ने जो जौहर दिखाया है वह बेमिसाल है।

कुंजीभूत शब्द

वीरांगना, गढ़मंडला, वीर नारायण, दलपतशाह, कीरतसिंह, क्षत्राणी, सम्राट अकबर, आसफ खां, आधार कश्यप

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

शोध विस्तार

मानव सभ्यता के आदिकाल से नारी का कार्य क्षेत्र घर माना गया है। वही संतान की जननी, पालन करने वाली और संरक्षिका है। पुरुष को वह जैसा बनती है वह प्राय: वैसा ही बन जाता है। इस दृष्टि से यदि उसे मानव जाति के निर्माणकत्री कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वैसे प्रकृति ने नारी को सब प्रकार की शक्तियां और प्रतिभाएं पूर्ण मात्रा में प्रदान की है। पर गृह संचालन की जिम्मेदारी के कारण उसमें मातृत्व और पत्नीत्व के गुणों का ही विकास सर्वाधिक होता है। उसको अपने इस क्षेत्र से बाहर निकालने की आवश्यकता बहुत कम पड़ती है पर जब आवश्यकता पड़ती है तो वह अन्य क्षेत्र में भी ऐसे महानतम कार्य कर के दिखाती है कि दुनिया चकित रह जाती है। समय-समय पर भारत में ऐसी वीरांगनाएं उत्पन्न हुई हैं जिन्होंने वीरता तथा युद्ध संबंधी कार्य में पुरुषों से अधिक साहस और योग्यता दिखलाई है।

एक ऐसी ही वीरांगना आज से लगभग 400 वर्ष से पहले हुई थी। उसे समय भी सम्राट अकबर के दबदबे से बड़े से बड़े राजा उसके अधीन हो गए थे। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि के प्रसिद्ध क्षत्रिय नरेशों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी और वह उसके सहायक भी बन गए थे। एकमात्र चित्तौड़ के महाराजा महाराणा प्रताप सिंह को छोड़कर किसी राजा ने भी अकबर का सामना करने का साहस नहीं किया था। पर उसे समय नारी होते हुए भी विरांगना रानी दुर्गावती ने दिल्ली सम्राट की विशाल सेना के सामने खड़े होने का साहस किया और उसे दो बार पराजित करके पीछे खदेड़ दिया।

रानी दुर्गावती का प्रारंभिक जीवन - दुर्गावती कालिंजर के अंतिम शासक चंदेल नरेश कीर्ति सिंह की पुत्री थी। कीर्ति सिंह का कालिंजर और अजयगढ़ पर आधिपत्य था 5 अक्टूबर 1524 ई को कालिंजर में दुर्गावती का जन्म हुआ। कालिंजर दुर्ग में दुर्गा अष्टमी के दिन जन्म के कारण दुर्गावती नामकरण हुआ। दुर्गावती कीर्ति सिंह की एकमात्र संतान थी। इसलिए उन्होंने उसे पुत्र के समान ही पाला था। उसने घुड़सवारी व शस्त्र चलाने की शिक्षा बचपन से पाई थी। और तेरह - चौदह वर्ष की आयु में ही वह अकेले बीहड़ जंगलों से सिंह तेंदुआ आदि भयंकर वन जंतुओं का शिकार करने लग गई थी।[1] दुर्गावती के विवाह की घटना कम रोमांचकारी नहीं है। डॉक्टर

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

वृंदावन लाल वर्मा के अनुसार दुर्गावती अपने पिता के साथ मनियांगढ़ शेर का शिकार करने गई थी, और वहीं पर दुर्गावती और दलपतशाह के प्रेम का सूत्रपात हुआ। इसकी जानकारी होने पर दलपतशाह के पिता संग्राम शाह और उनकी रानी पद्मावती ने इसे विवाह संबंध में रूपांतरित करने की योजना के तहत कालिंजर की यात्रा की। दलपत शाह एक प्रसिद्ध वीर और योग्य शासक था। उसके राज्य की सुव्यवस्था ऐसी उत्तम और सुरक्षा की दृष्टि से भी उसकी सेना इतनी तैयार और समस्त संसाधनों से युक्त थी कि मुसलमान शासको कि उसे पर आक्रमण करने की कभी हिम्मत नहीं होती थी। जब दलपत शाह ने राजकुमारी दुर्गावती के रूप और वीरता की चर्चा सुनी तो उसने उसी को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय किया उसने पुरोहित और एक दो सरदारों को कालिंजर भेजा कि वह राजा कीर्ति सिंह के सम्मुख इस प्रस्ताव को रखें। दुर्भाग्यवश कीर्ति सिंह कुछ पुराने विचारों के व्यक्ति थे। और जाति पांति की मर्यादा को ही सबसे बड़ी चीज मानते थे। वह महोबा के चंदेल राजाओं के वंशज थे। जिनके दरबार में कभी आल्हा ऊदल जैसे भारत के प्रसिद्ध वीर रहते थे। यद्यपि उनका अंत हुए कई सौ वर्ष बीत चुके थे, और इस बीच में मुस्लिम आक्रांताओं ने हिंदू धर्म और जाति की खूब दुर्गति की थी। पर कीर्ति सिंह उन लोगों में से थे जो इन सब बातों से शिक्षा ग्रहण करने के बजाय पुरानी शान में डूबे हुए थे। उनको मालूम हुआ कि दलपतशाह उनकी अपेक्षा कुछ नीचे श्रेणी का क्षत्रिय है। बस उन्होंने अन्य सब बातों की उपेक्षा करके इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए स्पष्ट कह दिया कि हम अपने से निम्न श्रेणी के क्षत्रियों को अपनी पुत्री नहीं दे सकते।[2]

जिस प्रकार दलपतशाह दुर्गावती के रूप गुण की चर्चा सुनकर उसकी तरफ आकर्षित हुआ था। उसी प्रकार दुर्गावती भी उसकी प्रशंसा सुनकर अपने मन में उसे अपना पति बनाने का विचार करती रहती थी। पर उसे समय यहां के क्षत्रियों की बुद्धि कुछ ऐसी विपरीत हो गई थी कि वह विवाह शादी के अवसर पर प्राय: लड़ाई झगड़ा पैदा कर लेते थे। कीर्ति सिंह के अहमन्यतापूर्ण उत्तर को सुनकर दलपत शाह को बुरा लगा और उसने एक शक्तिशाली सेना लेकर कालिंजर पर हमला कर दिया। कीर्ति सिंह भी वीर था पर दलपतशाह है उसके मुकाबले में नई उम्र का जोशीला व्यक्ति था। उसने दो-चार मुठभेड़ के बाद ही, जिसमें सैकड़ो वीर मारे गए, कालिंजर पर अधिकार कर लिया। फिर भी उसने पराजित कीर्ति सिंह से किसी भी प्रकार का

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

दुर्व्यवहार नहीं किया और उसकी कन्या दुर्गावती की इस प्रकार याचना की मानो कोई बात ही न हुई हो। उसकी सज्जनता देखकर कीर्ति सिंह को अपनी करनी पर बड़ा पश्चाताप हुआ और उसने विधिपूर्वक दुर्गावती का विवाह उसके साथ कर दिया। दुर्गावती ने अपने ससुर संग्राम सिंह के शासनकाल में विवाहित होने के बाद भी एक श्रेष्ठ वधू की भांति रहकर अपने शील और शिष्टता का परिचय दिया। सन 1543 में संग्राम शाह की मृत्यु के बाद दलपतशाह सिंहासनारुढ़ हुआ। उसके शासनकाल में भी दुर्गावती ने अपने सदा चरण शील तथा व्यवहार से सभी को वशीभूत कर रखा था।[3]

पुत्र का जन्म और पति का निधन - विवाह के पश्चात नव दंपति सुख पूर्वक अपनी राजधानी गढ़मंडला में रहने लगे और वर्ष से बर्बाद ही एक पुत्र का जन्म होने से उनकी प्रसन्नता का ठिकाना ना रहा। पर होनहार को कौन जानता है? दो साल बाद ही दलपतशाह बीमार पड़े और कुछ ही समय में उनके बचने की आशा न रही। दुर्गावती के शोक संताप का ठिकाना न रहा। पति के न रहने पर उसने सती होकर उसी के साथ जाने का निश्चय कर लिया। पर लोगों ने तीन वर्ष के राजकुमार के अनाथ हो जाने का भय दिखाकर उसे ऐसा कृत करने से सर्वथा रोक दिया। पुत्र मोह के कारण दुर्गावती को विवश होकर इसे स्वीकार करना पड़ा। पति के मरने पर दुर्गावती ने अपने पुत्र वीर नारायण को गद्दी पर बैठाया और स्वयं संरक्षिका के रूप में राज्य की व्यवस्था करने लगी। उसने यह कार्य ऐसे मनोयोग, योग्यता और परिश्रम से किया कि थोड़े ही समय में वहां की काया पलट हो गई। प्रजा के सुखी और संतुष्ट होने से राज्य का वैभव भी बढ़ने लगा और दुर्गावती का नाम चारों तरफ फैल गया। उसने राजकुमार की शिक्षा का भी बहुत अच्छा प्रबंध किया और स्वयं उसको हर तरह के हथियार चलाना और अपनी रक्षा करना सिखाने लगी। लोगों को आशा हो गई की वीर नारायण अवश्य ही बड़ा होकर एक आदर्श राजा बनेगा।

दुर्गावती के लिए एक नई विपत्ति सिर उठा रही थी। जैसे-जैसे उसके राज्य की समृद्धि बढ़ती जा जाती थी ।चारों ओर ने यश फैलता जाता था वैसे ही वैसे उससे अनेक ईर्ष्या करने वाले भी पैदा होते जाते थे। अगर कोई पुरुष शासक ऐसी उन्नति करता तो संभवत लोगों का ध्यान उसकी तरफ अधिक आकर्षित न होता। पर एक स्त्री का इतना आगे बढ़ाना और

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

अधिकांश पुरुष शासको के लिए उदाहरण स्वरूप बन जाना उनको खटकने लगा। वास्तव में दलपतशाह का देहांत हो जाने पर आसपास के शासकों ने तो उसके गोंडवाना राज्य को लावारिस समझ लिया कि अब वह हमारे ही अधिकार में आएगा। पर जब दुर्गावती के सुप्रबंध और शक्ति बढ़ जाने से उसकी स्थिति और भी मजबूत हो गई तो उनकी आंखें खुली रह गई। पहले तो मालवा के शासक बाज बहादुर ने गढ़मंडला पर हमला किया। पर दुर्गावती ने उसे ऐसी करारी हार दी कि उसे अपना सब कुछ छोड़कर जान बचाकर भागना पड़ा। उसके बाद अन्य किसी छोटे शासक की यह हिम्मत नहीं हुई कि वह गढ़मंडला की तरफ आंख उठा कर देख सके।[4]

इस समय दिल्ली के तख्त पर अकबर विराजमान था। वह भी कम उम्र का ही था। पर परिस्थितियों ने उसे इसी उम्र में महत्वाकांक्षी और कूटनीतिज्ञ बना दिया था। उसने देखा कि इस देश में जमकर सफलतापूर्वक शासन करना है तो यहां के प्रभावशाली व्यक्तियों को मिलकर ही चलना चाहिए। इसलिए उसने राजपूत राजाओं के साथ शादी विवाह का प्रस्ताव किया और और दो एक स्थान के शासक से ऐसा संबंध स्थापित करके उनका पक्का हितैषी और मित्र भी बन गया। जो लोग इस तरह की चलो में ना आए उनको ताकत के जोर से दबा दिया गया। उसने मालवा और बंगाल को अपने अधिकार में कर लिया था और अब गोंडवाना तथा दक्षिण की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रहा था। रानी दुर्गावती ने भी उसके इरादों का अनुमान कर लिया था। पर इतने बड़े सम्राट का सामना करने की शक्ति गढ़मंडला में थी नहीं फिर भी रानी समय को निकलती हुई चुपचाप अपनी सैनिक शक्ति को बढ़ाती रही। उसने निश्चय कर लिया कि यद्यपि वह एक स्त्री ही है तो भी अकबर के किसी अन्यायपूर्ण आदेश को नहीं मानेंगी और ना ही अपनी स्वाधीनता को सहज में चली जाने देगी।[5]

अकबर की चाल - अकबर ने कड़ा के सूबेदार आसफ खान को आदेश दे रखा था कि वह गोंडवाना राज्य का हाल-चाल लेता रहे और भीतर ही भीतर ऐसी तोड़फोड़ करता रहे कि वह प्रदेश सहज में ही अपने अधिकार में आ जाए। आसफ खान स्वयं ही गोंडवाना के वैभव को देखकर ललचा रहा था कि दिल्ली से सैनिक सहायता मिल जाए तो उसका एक ही बार में सफाया कर दिया जाए। उसने अपने गुप्तचर भेज कर रानी दुर्गावती के कुछ लालची और

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

चरित्रहीन सरदारों को धन और पद का लोभ दिखाकर अपनी ओर कर लिया। इतनी तैयारी की खबर पाकर अकबर युद्ध का बहाना ढूंढने लगा। उसने सुन रखा था कि गढ़मंडला का पुराना दीवान आधार कायस्थ बड़ा योग्य और स्वामी भक्त है और रानी की सफलता में उसका बड़ा हाथ है। बस उसने एक चाल सोची और दूत के हाथ एक पत्र दुर्गावती को भेजा कि वह दीवान आधार कायस्थ को दिल्ली भेज दे। जहां उससे कुछ शासन संबंधी कार्य कराया जाएगा। अकबर का वास्तविक इरादा यह था कि अगर रानी दीवान आधार कायस्थ को भेजने से इंकार करेगी। तो इसी बहाने उस पर चढ़ाई कर दी जाएगी। और यदि वह दिल्ली आ गया तो उसे हर तरह का लालच दिखाकर अपनी ओर मिला लिया जाएगा और उसी को आगे करके गोंडवाने पर आक्रमण किया जाएगा। जिससे वहां की प्रजा में भी फूट पड़ जाएगी।[6]

इस पत्र को पाकर रानी सोच विचार में पड़ गई। वह अपने स्वामी भक्त दीवान को किसी प्रकार की विपत्ति में फंसने देना नहीं चाहती थी। पर यह भी समझती थी कि यदि वह बादशाह के आदेश को अमान्य कर देगी तो यही उसके लिए एक बहाना मिल जाएगा।अंत में उसने यही निर्णय किया कि जब घटना एक दिन होनी है तो इसी समय क्यों ना हो जाए? व्यर्थ में अपने सच्चे ही हितैषी दीवान के प्राण संकट में क्यों डाले जाएं? पर दीवान आधार कायस्थ ने स्वयं इस विचार से असहमति प्रकट की उसने कहा कि अगर मेरे वहां जाने पर यह संकट टल जाए तो इससे अच्छा क्या होगा? मैं कोई बच्चा या नमक हराम तो हूं नहीं कि मुझे अकबर अपनी तरफ मोड़ लेगा। इसके बजाय दिल्ली जाकर मैं स्वयं उसकी योजना और चालों का पता लगाऊंगा और उनको निष्फल करने का भी प्रयत्न करूंगा। मैं आपके स्वाधीनता प्रेम का जिक्र उसके सामने अच्छी तरह कर दूंगा और समझा दूंगा की गोंडवाना को जितना उतना सहज नहीं है जितना उसने समझ रखा है। अगर वह किसी तरह मान जाए तो अच्छा ही है। अन्यथा अपनी मातृ भूमि की रक्षा के लिए प्राण देना तो प्रत्येक स्वाभिमानी पुरुष का कर्तव्य ही है। रानी ने दीवान को रोकने की बहुत कोशिश की पर अंत में उसका दृढ़ आग्रह देखकर वह चुप हो गई। दिल्ली पहुंचने पर दीवान आधार कायस्थ ने वही बात पाई जिसकी आशंका थी। अकबर ने पहले तो उसको गोंडवाने का शासक अथवा अपना मंत्री बनाने का लालच दिया। पर जब उस पर

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उसे जेल खाने में बंद कर दिया। इसके बाद उसने आसफ खान को शीघ्र ही गोंडवाना पर चढ़ाई करने की तैयारी करने का आदेश दिया।[7]

गढ़मंडला पर आक्रमण - अकबर का आदेश पाकर और यह जानकर कि अब दीवान आधार कायस्थ भी दिल्ली में कैद है, आसफ खान ने चटपट चढ़ाई की तैयारी की और गोंडवाना राज्य में घुस गया। पर मुगल शासक वीरांगना दुर्गावती से सशंकित थे, और उन्होंने एक साथ दो मोर्चों पर आक्रमण करने की योजना बनाई। एक तरफ तो बादशाही फौज मार्ग में पड़ने वाले छोटे राजाओं और तथा जागीरदारों आदि को दबाती हुई आगे बढ़ रही थी तो दूसरी ओर बहुत से गुप्तचर समस्त रियासत में फैल कर प्रजा में रानी के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे और अकबर की उदारता दानशीलता की प्रशंसा लोगों को सुना रहे थे। साथ ही कुछ विशेष गुप्तचरों को इसलिए भेजा गया था कि वह गढ़मंडला के कुछ उच्च अधिकारियों और फौजी अफसर को धन और पद का लालच देकर उन्हें अपनी ओर मिला ले। मुगलों को गढ़मंडला में भी ऐसे कई देशद्रोही मिल गए उनमें से बदन सिंह नाम का सरदार कुछ व्यक्तियों को लेकर अकबर से जाम मिला। और गढ़मंडला के समस्त सैनिक रहस्य उसे बतला दिए। इससे अकबर वहां के शक्तिशाली और कमजोर पहलुओं को अच्छी तरह समझ गया और उसने अपनी सेना में उन सभी साधनों तथा युद्ध सामग्री की व्यवस्था कर दी जिनकी वहां आवश्यकता पड़ने वाली थी।

दुर्गावती को इस बात का बड़ा खेद था कि उसके साथियों में से ही कुछ घर के भेदिया बनाकर शत्रु को आगे बढ़ाने में मदद पहुंचा रहे हैं तो भी वह अपने मार्ग से विचलित नहीं हुई। वह अच्छी तरह जानती थी कि मुगल बादशाह के साधनों की तुलना में गढ़मंडला के साधन अल्प ही हैं तो भी उसने अपने मन में एक क्षण के लिए भी ना तो निराश आने दी और ना ही कायरता। उसकी दृष्टि अपने कर्तव्य पालन की तरफ थी फिर परिणाम चाहे कुछ भी निकले। मुगल सेना के आगे बढ़ने का समाचार पाकर रानी ने भी अपनी सेना को भी पूरी तरह तैयार हो जाने की आज्ञा दे दी। सिपाहियों की संख्या बढ़ाई गई और उनको कारगर हथियार दिए गए। इसके अतिरिक्त वह अपनी प्रजा में भी हर तरह से शत्रु का प्रतिरोध करने का उत्साह उत्पन्न करने लगी। वह स्वयं और उसका पुत्र वीर नारायण जो अब सोलह वर्ष का हो चुका था। चारों

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

तरफ घूम-घूम कर सैनिक तैयारी का निरीक्षण करते और उत्साह पूर्ण वार्तालाप से लोगों के साहस को बढ़ाते अभी तक समस्त युद्ध में गढ़मंडला की सेना ने जिस तरह वीरता दिखाकर विजय प्राप्त की थी उसकी चर्चा करके इस बार उससे भी अधिक जोर से लड़ने की सैनिकों को प्रेरणा देते।

युद्ध का आरंभ - जब शत्रु सेना काफी नजदीक आ पहुंची तो रानी दुर्गावती स्वयं घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ी। उस समय हाथ में नंगी तलवार लिए हुए साक्षात दानव दलनी दुर्गा देवी की तरह ही दिखाई पड़ रही थी। अपने सैनिकों को इस प्रकार उत्साहित कर रानी ने स्वयं मुगल सेना में घुसकर ऐसी मार काट मचाई की मुगल सेना के छक्के छूट गए। कहां तो वह गढ़ मंडला के धन को लूट कर ले जाने का सपना देख रहे थे और कहां यहां प्राणों के ही लाले पड़ गए। हजारों लाशों से पृथ्वी के पट जाने से बादशाही सेना में भगदड़ मच गई, और आसफ खान अपने कैंप को कई मील पीछे हटा ले गया। रानी की सेना विजय का डंका बजाती हुई अपने कैंप में वापस आ गई।[9]

युद्ध का दूसरा दौर -इस पराजय से आसफ खान बड़ा दुखी हुआ। उसकी गिनती मुगल साम्राज्य की प्रसिद्ध सेना अध्यक्षों में की जाती थी, और पहले वह अनेक राजाओं को जीतकर मुगल सम्राट अकबर के अधीन कर चुका था। अब एक स्त्री से हर कर वह अपना मुंह दुनिया को कैसे दिखलाएगा? उसने इस बात को अपने लिए बड़ा अपमानजनक समझा। और सारी बुद्धि लगाकर इसका प्रतिकार करने की युक्ति सोचने लगा। उसने नई सैनिक सहायता आने तक किसी तरह से युद्ध को स्थगित रखने का प्रयत्न किया। बादशाही पक्ष की तरफ से एक दूत सफेद झंडा लेकर गढ़मंडला की तरफ चला। उसके द्वारा आसफ खान ने रानी के पास संधि का संदेश भेजा था। हार जाने पर भी उसने संधि की शर्तें ऐसी रखी थी मानो कि विजय उसी की ही हुई हो। उसने रानी को लिखा कि वीर नारायण को दिल्ली भेजा जाए और वह सम्राट अकबर की संरक्षकता में रहकर गोंडवाना का शासन कार्य करें, तो मुगल सेना का आक्रमण रोका जा सकता है। इस शर्त को सुनकर रानी ने दूत को उसी क्षण लौट जाने को कहा। उसने कहा कि मैंने उसी समय मुगल सेना को राज्य के बाहर तक खदेड़ कर उसकी छावनी में आग नहीं लगा दी, इसका

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

एहसान तो तुम नहीं मानते और उल्टा मेरे पुत्र को दिल्ली दरबार में हाजिर होने की मांग करते हो। आसफ खान रानी का उत्तर सुनकर बड़ा लज्जित हुआ और मन ही मन आगे की चाल सोचने लगा।[9]

गढ़मंडला के सैनिक अब तक तीर, तलवार, भाले आदि से ही लड़ते आए थे। कुछ लोग पुराने ढंग की बंदूकों का प्रयोग करना भी जान गए थे। पर इन हथियारों से तोपों का मुकाबला नहीं किया जा सकता था। तोप की मार दो-चार मील तक होती ही थी और उनका गोला जहां गिरता था वहां दस-पांच आदमियों को मार ही देता था। उस समय तोपों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी। बहुत भारी होने से उनका इधर-उधर हटाया जाना भी कठिन होता था। उनके भयंकर शोर और गोले द्वारा किले की दीवारों को टूटते देखकर लोगों में आतंक का भाव उत्पन्न हो जाता था। तो भी रानी दुर्गावती ना तो भयभीत हुई और न निराशा का भाव मन में लाई। उसने अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि यद्यपि हमारे पास तोपें नहीं है पर उससे भी शक्तिशाली आत्मबल हमारे पास है।

हम स्वदेश की रक्षा के लिए सत्य और धर्म के अनुकूल युद्ध कर रहे हैं। यह कम महत्व की बात नहीं है। याद रखो सत्य की सदा ही विजय होती है। ये दस बीस तोपें मातृभूमि के मतवालों को कदापि नहीं रोक सकती। यह कहकर उसने एक हजार सेनानी लेकर बड़ी तेजी के साथ तोपों पर धावा बोल दिया। यद्यपि इस संघर्ष में कई सौ वीर तोपों की भेंट चढ़ गए, पर रानी ने तोपों के पास पहुंचकर गोलंदाजों का सफाया कर दिया। इस प्रकार तोप खाने को निष्क्रिय हुआ देखकर आसफ खान बड़ा घबराया।उस समय रानी थोड़े से साथियों को लेकर ही शत्रु दल में एसी मारकाट मचा रही थी कि बड़े बड़े वीरों के होश उड़ गए। इतने में गढ़मंडला की-शेष सेना भी वहां पहुंची और बादशाही सेना पर ऐसी मार पड़ी कि वह प्राण बचाने के लिए फिर भाग खड़ी हुई।

दुर्गावती के साथ विश्वासघात - द्वितीय आक्रमण में विजय पाकर गढ़मंडला की सेना उत्साह में आकर जश्न मनाने लगी और अनुशासन ढीला पड़ गया। उधर आसफ खान दो बार हार जाने से

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

बुरी तरह तिल मिल रहा था, और अपने सब सलाहकारों को इकट्ठा करके आगे की नई चाल सो रहा था। इस अवसर पर उससे मिले हुए गढ़मंडला के विश्वासघाती कुछ व्यक्तियों ने उसके कैंप में पहुंचकर खबर दी कि इस समय गढ़मंडला की सेना जश्न मनाने में मस्त है। अगर इस समय आकस्मिक रूप से आक्रमण कर दिया जाए तो वह तैयार होने का भी अवसर न पाएगी और नगर पर कब्जा किया जा सकेगा। आसफ खान तो ऐसे मौके की ताक में ही था। उसने उन घरों के भेदियों को साथ लेकर उसी समय सेना को किले पर धावा बोलने की आज्ञा दे दी। जब यह समाचार रानी दुर्गावती को मालूम हुआ तो वह गंभीर हो गई। घर के भेदियों का कुछ हाल तो उसे पहले से ही मालूम था पर वह इस प्रकार प्रकट रूप से शत्रु से मिल जाएंगे इसका अनुमान वह न कर सकी थी। फिर भी युद्ध का अभ्यास होने के कारण वह घबराने वाली न थी। उसने शीघ्रता में जितनी सेना इकट्ठा हो सकी उसे लेकर शत्रुओं के बीच में ही रोका और घमासान संग्राम आरंभ हो गया।

इस बार सेना में जो कमजोरी दिखाई पड़ती थी उसको पूरा करने के उद्देश्य से अपने पुत्र वीर नारायण को ही सैन्य संचालन का भर दे दिया था। इसी समय रानी ने भी नारायण को शत्रु सैनिकों से अकेले लड़तेते घोड़े से गिरते देलड़-खा। साथ ही समाचार आया की तोपों की मार से किले की दीवार एक स्थान पर टूट गई है। उसने समझ लिया कि बस अब अंत आ गया है। वीर नारायण की वीरगति पाने से अब उसे जीवन से तनिक भी मोह ना रह गया था। वह चुने हुए तीन सौ सवार को लेकर मुगल सेना पर टूट पड़ी। उसने सैकड़ो शत्रुओं को यमलोक पहुंचा। पर अचानक एक तीर जाकर उसकी आंख में लगा। उसने उसे अपने हाथ से बाहर खींच लिया। इतने में दूसरा तीर गर्दन में लगा। उसे असह वेदना होने लगी। उस समय रानी ने अपने स्वामी भक्त महावत आधार सिंह बघेल को सामने देखकर कहा कि अब मैं रक्त निकलने से अशक्त होती जा रही हूं। मैं कभी नहीं चाहती कि शत्रु मुझे जीवित अवस्था में छू सके। इसलिए तुम तलवार से मेरी जीवन लीला समाप्त कर दो। पर महावत आधार सिंह बघेल इस बात को सुनकर कांप उठा और उसने भरे हुए कंठ से कहा मैं असमर्थ हूं मेरा हाथ आप पर नहींउठ सकता। रानी जोश में आ गई और मरते-मरते उठकर बैठ गई। और अपनी कटार जोर से अपनी छाती में मार कर 24 जून 1564 ई को आत्म बलिदान कर दिया।[10]

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

सन्दर्भ

1. वर्मा वृंदावन लाल, महारानी दुर्गावती, प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन 2020
2. तिवारी गोरेलाल, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, काशी-नागरीप्रचारिणी सभा, इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
3. श्रीवास्तव बी के, बुन्देलखण्ड का इतिहास, 1531 से 1857 ई. तक, डी के प्रिंटवर्ल्ड प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली
4. बाजपेई नाथ दिवाकर अरुण, वीरांगना रानी दुर्गावती, एक काव्यांजलि, साहित्य प्रकाशन
5. भारद्वाज शंकर दयाल, रानी दुर्गवती: एक बलिदान गाथा, प्रभात प्रकाशन, जनवरी 2018
6. सेन गुप्ता नंदनी - 'रानी दुर्गावती - द फॉरगॉटन लाइफ ऑफ अ वॉरियर क्वीन', प्रकाशक : पेंगुइन इंडिया
7. शर्मा कमला, यशस्विनी रानी दुर्गावती, प्रकाशक : सी.बी.टी.
8. भार्गव दुलारे लाल, दुर्गावती, प्रकाशक : माधुरी प्रकाशन
9. पई अनंत, रानी दुर्गावती, प्रकाशक : इंडिया बुक हाउस लिमिटेड
10. वर्मा सिंह राजगोपाल, दुर्गावती : गढ़ा की पराक्रमी रानी, प्रकाशक : शतरंग प्रकाशक, लखनऊ

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार